शांति शिक्षा एवं विद्यालयों में शांति संस्कृति की अवधारणा

कुछ विचारणीय बिन्दु

आलोक गार्डिया*

पुष्पेश पाठक**

वर्तमान वैश्विक युग में जहाँ ज्ञान के विस्तृत स्वरूप एवं नित नवीन तकनीकों का अभ्युदय हुआ हैं, वही असहिष्णुता, कट्टरवाद, विवाद, संघर्ष एवं आतंकवाद की निरन्तर आशँकाएँ भी इसी आधुनिक समाज की देन है। उपरोक्त समस्याओं के निदान हेतु बालक व बालिकाओं में शांति आधारित व्यवहार के विकास हेतु शांति शिक्षा की परिकल्पना की गई है। इस संदर्भ में आवश्यक है कि विद्यालयों में शांति संस्कृति की स्थापना की जाए। विद्यालयों में विश्वास का वातावरण, प्रकृति मानव के मध्य सामंजस्य, न्याय करने की शक्ति का विकास एवं अपने व दूसरों के मानवाधिकारों के प्रति सम्मान आदि शांति संस्कृति स्थापना के महत्त्वपूर्ण घटक हैं। प्रस्तुत लेख में शांति संस्कृति की स्थापना हेतु आवश्यक सार्वभौमिक मानवीय गुणों का यथासंभव विवेचन किया गया है तथा शांति शिक्षा अध्ययन-अध्यापन हेतु आवश्यक कुछ महत्त्वपूर्ण सुझावों को भी शामिल किया गया है।

हिंसा चाहे वैश्विक स्तर पर, या राष्ट्रीय स्तर पर, या स्थानीय एवं वैयक्तिक स्तर पर हो उसके नित नए-नए स्वरूप जैसे असहिष्णुता, कट्टरवाद, वर्ग विवाद, संघर्ष, आतंकवाद के रूप में हमारे सामने आ रहे हैं। इन नित नए अनसुलझे विवादों से युद्ध और हिंसा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में जन्म ले रहे हैं इन अनसुलझे विवादों से हमेशा युद्ध व हिंसा जन्म नहीं लेते हैं। परन्तु यह कहना

**वरिष्ठ प्रवक्ता*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ. प्र.

***शोध छात्र*, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ. प्र.

समीचीन होगा कि हिंसा और युद्ध अनसुलझे विवादों की कई संभावित प्रतिक्रियाओं में से एक है। प्रत्यक्ष तौर पर हिंसा का तात्पर्य मार-काट एवं एक दूसरे को शारीरिक हानि पहुँचाने तक ही लिया जाता है। परन्तु गाँधी जी के अनुसार हिंसा केवल मार-काट या शारीरिक हानि पहुँचाने तक सीमित नहीं होती है वरन् दूसरों के साथ बुरा व्यवहार करना, दूसरों के प्रति बुरा सोचना, अच्छा आचरण प्रदर्शित न करना एवं परस्पर सहयोग की भावना न रखना भी हिंसा हैं। वर्तमान आधुनिक समाज में हिंसा का यहीं स्वरूप सामने आ रहा है। जिसके फलस्वरूप अशांति जन्म ले रही है। इसलिए व्यक्तियों, समूहों और राष्ट्रों के संदर्भ में उपर्युक्त अनसुलझे विवादों को सुलझाने के लिए अहिंसात्मक उपाय ढूँढ़ने के कौशलों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता हैं। अब प्रश्न यह उठता हैं कि शांति क्या है? या शांति से हमारा क्या अभिप्राय है? यह एक ऐसा आधारभूत प्रश्न है जो सहज ही दार्शनिक चिंतन की ओर ले जाता हैं। शांति को स्पष्ट करने से पहले कुछ प्रश्न उठ जाते हैं–क्या शांति वैयक्तिक अनुभूति का विषय है? शांति की प्रकृति कैसी है? क्या शांति मानसिक तनावों व अवसादों की समाप्ति का प्रतिफल है?, क्या शांति मानसिक संतोष की स्थिति है? यदि हम भारतीय दर्शन पर गौर करें तो उसमें जीवन का अन्तिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति बताया गया है। जहाँ पर मोक्ष जीवन का नितान्त वैयक्तिक पक्ष है, तथा इसकी प्राप्ति हेतु आध्यात्मिक साधना का मार्ग बतलाया गया है। यही आध्यात्मिक साधना शांति का दूसरा पर्याय है। शांति का दूसरा आयाम मनोवैज्ञानिक हैं। इसीलिए अर्थ एवं काम को पुरुषार्थ की श्रेणी में रखा गया है। इसके अभाव में वैयक्तिक स्तर पर, परिवार के स्तर पर और समाज के स्तर पर शांति असम्भव है प्रत्येक व्यक्ति अपनी मूलभूत मौलिक आवश्यकताएँ यथा अर्थ, काम, भोजन आदि को इसलिए जुटाता है कि जीने के लिए अनिवार्य व न्यूनतम स्तर को वह प्राप्त कर सके। क्योंकि इस स्तर से नीचे चले जाने पर जीवन अभावों से ग्रस्त हो जाऐगा तथा शांति स्वत: समाप्त हो जाऐगी। अत: निर्धनता, भुखमरी, रुग्णता अशांति के कारण है, दूसरी ओर यदि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कोई अनुचित तरीके से करता है, तो व्यक्ति स्वयं के जीवन को सुखमय बनाने के लिए दूसरों की सुविधाओं पर अनुचित अधिकार जमाने लगता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति-व्यक्ति में कलह और संघर्ष शुरु हो जाता हैं और समाज अशांति की भेंट चढ़ जाता है। अशांति के कारण व्यक्ति-व्यक्ति के बीच जाति, स्तर, धर्म को लेकर भेदभाव भी है। जब हम अपनी पृष्ठभूमि की आड़ में दूसरों को छोटा दिखाते हैं तब भी अशांति पनपती है। अशांति विद्यालयी व्यवस्था में भी है बच्चों पर विषयवस्तु में न समझ आने का बोझ तनाव बढ़ाता है और अशांति को जन्म देता है। शांति स्थापित करने के प्रयास में हमें इसकी शुरुआत विद्यालयों से करनी होगी। विद्यालयों में शांति का वातावरण स्थापित करना होगा। बच्चों को शांति से संबंधित गतिविधियों से जोड़ना होगा। इसी संदर्भ में गाँधी जी ने कहा था "यदि हमें विश्व में वास्तविक शांति का पाठ पढ़ाना है तो इसकी शुरुआत बच्चों से करनी होगी"। वर्तमान समय में शांति के महत्व को देखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण

परिषद् ने शांति के लिए शिक्षा विषय पर एक राष्ट्रीय फोकस समूह की स्थापना की और इसके द्वारा तैयार किए गए आधार-पत्र में दिए गए संबंधित विचारों को राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा-2005 में स्थान दिया। बच्चों को शांति के लिए शिक्षा देने से उनमें शांति की संस्कृति उत्पन्न होगी जो व्यक्ति से लेकर विश्व में शांति के संचार के रूप में काम करेगा।

शांति के लिए शिक्षा

शांति को बल द्वारा स्थापित नहीं किया जा सकता, इसे केवल सहयोग एवं सामंजस्य द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है (वार्ड 2001)। कहने का अभिप्राय यह है कि शांति कोई वस्तु नहीं है, जिसे बलपूर्वक हासिल किया जा सके। अगर सच्चे अर्थो में इसे प्राप्त करना है तो हमें व्यक्ति-व्यक्ति के बीच समझदारी को और अधिक विकसित करना होगा। इसके अलावा न तो यह वंशानुगत लक्षण है, बल्कि इसको व्यवहार में सिखाया जाता है। अगर हमें वास्तविक शांति प्राप्त करनी है तो बच्चों को (जो भविष्य में शांति निर्माता की भूमिका भी निभा सकते हैं) यह सिखाना होगा कि कैसे अपने विचारों, भावनाओं व वस्तुओं को दूसरों के साथ बाँटे। इसके लिए शिक्षा को प्रोत्साहित करना होगा। यूनिसेफ (UNICEF) ने शांति शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप परिभाषित किया है जो ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण मूल्यों व व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक त्तवों को प्रोत्साहित करती है, जिससे बच्चे, किशोर, व युवा इस योग्य हो सकें कि वह किसी भी प्रकार के मतभेदों व हिंसा को रोकने तथा ऐसी परिस्थितयों को उत्पन्न करने में जो शांति स्थापना की ओर ले जा सके, सक्षम हो सके। इस प्रकार शांति की उपयोगिता को बच्चों के संदर्भ में कनवेंशन ऑन दि राइट ऑफ चाइल्ड (1998) में यह कहा गया हैं–बच्चों की शिक्षा को इस प्रकार निर्देशित करना होगा कि वे स्वतंत्र समाज में जिम्मेदारीयुक्त जीवन जीने के लिए तैयार हो सकें, जिसमें समझदारी, शांति, सहनशीलता, लैंगिक समानता ओर सभी के बीच मित्रता निहित हो। अत: शिक्षा एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जो जनतान्त्रिक रीति से व्यक्ति में दीर्घकालीन परिवर्तन ला सकती है। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा व्यवस्था में ऐसे परिवर्तन किए जाएँ कि भावी पीढ़ी को शांति स्थापना के कार्य में निष्ठा के साथ लगाया जा सके। इस दिशा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा उठाए गए कदमों की प्रशंसा करनी होगी कि उसने अपने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा में शांति को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। परिषद के इस कार्य द्वारा शिक्षा व शांति के नए आयाम निर्धारित करने होंगे। शांति शिक्षा के संबंध में निम्न बिन्दु विचारणीय है–

1. शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला हैं। शिक्षा ही वह माध्यम है जो समाज के स्वरूप को परिवर्तन करने की क्षमता रखती है समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करती है। ये बुराइयाँ ही समाज में अशांति की जननी है। अत: शिक्षा के द्वारा ही उन कारणों (जो समाज में अशांति लाते हैं) का निराकरण किया जा सकता है।

2. शिक्षा के द्वारा विभिन्न संस्कृतियों, समाजों व राष्ट्रों के बीच संवाद उत्पन्न एवं विकसित किया जा सकता है, जो एक दूसरे की संस्कृतियों को समझने तथा उनके बीच आदान-प्रदान करने का आधार प्रस्तुत करती है।
3. समाज में व्याप्त विविधताओं का सम्मान करते हुए उनके बीच सामंजस्य स्थापित करने में शिक्षा की भूमिका सदा से रही है। रंगभेद, साम्प्रदायिकता, नस्लवाद, जातिवाद, कट्टरवाद तथा आतंकवाद जैसी समस्याओं का समाधान करने में शिक्षा व्यक्तियों को सक्षम बनाती है।
4. अन्त में शिक्षा के द्वारा हम वैयक्तिक स्तर पर उस सामंजस्य की भावना को जाग्रत कर सकते हैं, जिसे कभी ऋग्वेद की ऋषिप्रज्ञा ने इस प्रकार साक्षातकृत किया था (कृष्णलाल, 1993)।

   सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मानसि जानताम्,
   देवा भाग यथापूर्वे सजानाना उपासते।
   समानो मत्रः समितः समानी मनः सह चिनतेमेषाम्,
   समानं मन्त्रमभि मन्त्रये व समानेन वे हविषा जूहोमि।
   समानी व आकृतिः समानाः हृदयानि वः,
   समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।

अर्थात् हम परस्पर एक होकर रहें, परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करें, समान मन से ज्ञान प्राप्त करें जिस प्रकार श्रेष्ठ जन एक होकर उपासना करते हैं, उसी प्रकार हम भी अपने विरोध त्यागकर अपना कर्म करें। हम सबकी प्रार्थना समान हों, भेदभाव से रहित होकर परस्पर मिलकर रहे, मन, चित्त, विचार समान हों हमारे हृदय समान हों, जिससें हमारा कार्य परस्पर पूर्ण रूप से संगठित हो। इस तरह शिक्षा के द्वारा शांति की स्थापना करना असम्भव नहीं है।

शांति की संस्कृति

संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर (1998) के अनुसार शांति की संस्कृति का आधार, प्रजातंत्र, सहनशीलता, तथा मानवाधिकारों का सम्मान करना, मतभेदों तथा हिंसा को रोकने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में विकास, शांति के लिए शिक्षा, सूचनाओं का सुगम आदान-प्रदान तथा महिलाओं की विस्तृत भागीदारी को प्रोत्साहित करना और ऐसे उपाय करना है जिससे शांति के लिए उपयुक्त परिस्थिति उत्पन्न हो सके। शांति की संस्कृति का सर्वप्रथम आधार प्रजातंत्र का सम्मान करना यथा लोगों में प्रजातंत्र के प्रति जागरूकता, स्वतंत्र रूप से अपने विचारों का आदान-प्रदान करना, स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके अलावा शांति की संस्कृति नैतिक विकास के साथ उन मूल्यों, दृष्टिकोणों तथा कौशलों पर बल देती है जो प्रकृति व मानव के बीच सामंजस्य बिठाने के लिए आवश्यक है, इसमें जीने की खुशी, प्रेम, उम्मीद और साहस के आन्तरिक संसाधनों के साथ व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है। इसमें मानव अधिकारों के प्रति सम्मान करना, न्याय करने की शक्ति का विकास करना, अपने धर्म के अलावा दूसरे धर्मों को सम्मान देना व उनके सांस्कृतिक क्रियाकलापों में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना, सामाजिक दायित्व की पूर्ति करने हेतु प्रेरित करना शामिल हैं।

सामाजिक न्याय शिक्षा की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण घटक है। सामाजिक न्याय तथा समानता जिसमें गरीबों, वंचितों, शोषितों के उत्पीड़न न किये जाने संबंधी समग्र दृष्टिकोण पर बल देती है, जिसमें अहिंसामूलक समाज के विकास पर

जोर हो, उसे शिक्षा की संस्कृति का केंद्रीय आधार होना चाहिए। अतः शांति की संस्कृति मानव सुरक्षा को समझने व उसे प्रोत्साहित करने पर बल देती है।

शांति की संस्कृति को यूनिसेफ ने इस प्रकार परिभाषित किया है–एक संस्कृति जो सांस्कृतिक विभिन्नताओं को प्रोत्साहित करती है जिसमें विश्वास, मूल्यों, व्यवहार व सहयोग की भावना आदि शामिल हैं, जो परस्पर सुरक्षा, समानता, पृथ्वी के स्रोतों पर इसमें रहने वाले प्राणियों के बीच समान भागीदारी और साथ-साथ रहने को प्रोत्साहित करती है। पीस एजुकेशन इन यूनिसेफ (फांउटेन, 1999) में शांति की संस्कृति के लिए निम्नांकित तथ्यों को रेखांकित किया है–

1. सभी लोगों के बीच विश्वास का वातावरण उत्पन्न करना।
2. सभी लोगों की मूलभूत आवश्यकताएँ यथा, भोजन, पानी तथा अर्थ की पूर्ति करना।
3. पारस्परिक समझदारी को विकसित करना।
4. सूचनाओं के आदान प्रदान करने हेतु लोगों के बीच एक खुला वातावरण विकसित करना।
5. लोगों में सहनशीलता की भावना विकसित करना।
6. विभिन्न धर्मों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना।
7. विभिन्न धर्मों, जातियों, संस्कृतियों व जीवन शैली में सामंजस्य स्थापित करना।

उपर्युक्त तथ्यों के माध्यम से विद्यालयों में, समुदाय में, समाज में, और विश्व में शांति की संस्कृति के वातावरण को स्थापित करने में मदद मिलती है। शांति की संस्कृति की आवश्यकता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र की सामान्य सभा में दशक 2001-2010 को विश्व के बच्चों के लिए शांति की संस्कृति व अहिंसा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दशक के रूप में घोषित किया गया है। इसी सभा में शांति की संस्कृति को सभी मूल्यों, दृष्टिकोणों और व्यवहार के तरीके जो मानव विभिन्नताओं और सभी तरह के मानव अधिकारों के प्रति सम्मान करना, हिंसा चाहे किसी भी रूप में हो, अस्वीकार करना और लोगों के बीच समझदारी, स्वतंत्रता, न्याय, समानता, सहनशीलता की भावना के लिए प्रेरित करना हैं, के रूप में परिभाषित किया गया है। अतः शांति की संस्कृति को विकसित करने के लिए शांति की शिक्षा आवश्यक है।

शांति के लिए शिक्षा में अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया—कुछ सुझाव

शांति शिक्षा में अध्ययन-अध्यापन हेतु प्रत्यक्ष विधियों के बजाए अप्रत्यक्ष विधियाँ अधिक उपयोगी हैं। इस हेतु सम्पूर्ण विद्यालयी परिवेश में शांति संस्कृति को अपनाना एवं विद्यालयी वातावरण में परिलक्षित करना अति आवश्यक है। शांति अध्ययन-अध्यापन हेतु निम्न सुझााव प्रस्तुत हैं–

1. विद्यालयों में समय-समय पर सांस्कृतिक विभिन्ताओं में समन्वय प्रदर्शित करने वाले तथा धार्मिक उत्सवों से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
2. ऐसी फिल्मों की सूची तैयार की जाए, जो शांति, न्याय, एकता को बढ़ावा देती हो तथा उन्हें समय-समय पर दिखाया जाए।

3. विद्यालयों में छात्रों से ऐसे कार्यो यथा– सफाई, पौधे लगाना आदि कराया जाए, जिसको सभी बच्चे मिल जुलकर करें, जिससे उनमें परस्पर सहयोग की भावना विकसित हो।
4. किसी भी क्षेत्र में वर्तमान समय में मीडिया की भूमिका को नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है। अत: शिक्षा में शांति के प्रयास में मीडिया को सहयोगी बनाया जाए, तथा समय-समय पर विद्यालयों में बच्चों को शांति से संबंधित विषयों पर संबोधित करने के लिए प्रमुख पत्रकारों के व्याख्यान एवं युद्ध विभीषिका, हिंसा के परिणामों पर आधारित चलचित्र एवं समाचारों का प्रदर्शन किया जाए।
5. शांति से संबंधित विषयों पर विद्यालयों में बच्चों के बीच भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए तथा ऐसी व्यवस्था की जाए कि बच्चों के विचारों को कम-से-कम महीने में एक बार समाचार पत्रों में प्रकाशित किया जा सके।
6. शांति से संबंधित विषयों पर विद्यालयों में समय-समय पर सेमिनार/समूह परिचर्चा का आयोजन किया जाए।
7. विद्यालयों में शिक्षकों व अभिभावकों की संगोष्ठी का आयोजन कर अभिभावकों को शांति से संबंधित व्यवहारों की जानकारी दी जाए।
8. शांति से संबंधित व्यवहारों का ज्ञान देने के लिए शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
9. विद्यालयों में एक ऐसे रीडिंग रूम की व्यवस्था की जाए जिसमें शांति विषयों से संबंधित समाचारों व घटनाओं की पत्रिकाएँ व पुस्तकें उपलब्ध हों।
10. शिक्षकों को शांति व्यवहार के संदर्भ में बच्चों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे बच्चे प्रेरित हो सकें।
11. शांति के व्यवहार को बच्चों में प्रोत्साहित करने के लिए कुछ बच्चों को अच्छा व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए पुरस्कृत करने की व्यवस्था की जाए।

यही नहीं, अत्यावश्यक कदम यह होगा कि हम पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों को ऐसा बनाएँ जिसमें दी गई विषयवस्तु बच्चों में दिन प्रतिदिन के अनुभवों से जुड़ी हों, बच्चे अपने अनुभवों की कक्षा में चर्चा करें और विद्यालयी ज्ञान को इनसे जोड़कर सीखें। इससे न समझ में आने वाली विषयवस्तु के कारण पैदा होने वाला तनाव तो घटेगा ही, बच्चों में समझ का चस्का पैदा होगा जो नई तरह के द्वन्द्वों को मिटाकर शांति की स्थापना में सहायक होगा।

इस प्रकार विद्यालयी परिवेश में शांति संस्कृति की स्थापना कर भावी नागरिकों में शांति उन्मुख व्यवहार सुनिश्चित किया जा सकता है जो केवल भारत में ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व में शांति के संदेश को संचरित कर सके एवं प्रत्येक बच्चा अपने को विश्व समुदाय का नागरिक अनुभूत कर सके।

संदर्भ

कृष्णमूर्ति, जे. 1992. *एजुकेशन एण्ड सिगनीफिकेंस ऑफ लाइफ,* चेन्नई, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन.

कृष्णलाल 1993, *वेद परिचय*, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

एन.सी.ई.आर.टी. 2006, *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क 2005, पोजिशन पेपर नेशनल फोकस ग्रुप ऑफ एजुकेशन फॉर पीस,* नई दिल्ली.

एन.सी.ई.आर.टी. 2005, *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,* नई दिल्ली.

फाउटेन, एस. 1999, *एजुकेशन फार पीस इन यूनिसेफ, न्यूर्याक,* वर्किंग पेपर एजुकेशन सेक्शन, प्रोग्राम डिविजन, यूनिसेफ.

यूनाइटेड नेशन 1998, *कल्चर ऑफ पीस (A/Res/52/13,15 जनवरी 1998,* http:/www.unesco.org/jyep/07uk/uk_sum_refdoc.htm.

यूनाइटेड नेशन एसेम्बली, 53 *सेसन एजेंडा आइटम* 31, 19 नवम्बर 1998.

यूनाइटेड नेशन जनरल एसेम्बली, 1998, *दि कनवेंशन दि राइट्स ऑफ दि चाइल्ड.*

वर्मा. वैद्यनाथ प्रसाद 1972. विश्व के महान शिक्षा शास्त्री, पटना, बिहार हिन्दी अकादमी प्रकाशन.

वार्ड एशले, जे. 2001. *डेवलपिंग ए कल्चर ऑफ पीस एण्ड नान वाइलेंस थ्रू एजुकेशन* /http:/www.mkgandhi.org/articles/Peace4.htm/ द्वारा मार्च 2009 में प्राप्त.

वेल्स. लीच. सी. 2003, *ए. कल्चर आर्फ टीचिंग पीस* http:/www.commandreams.org/views03/0616-01.html/ द्वारा मार्च 2009 में प्राप्त.